सूरदास

- जीवन परिचय

कवि - एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म** - सन् 1478 ई0 ।
- **जन्म-स्थान**-रुनकता।
- **पिता** - रामदास सारस्वत ।
- **मृत्यु** - सन् 1583 ई0 ।
- **भाषा** - ब्रज।
- **शैली**- मुक्तक शैली के गेयपद। अष्टछाप एवं भक्तिकाल के कवि।
- **रचनाएँ**- सूरसागर, साहित्य लहरी, सूर सारावली ।

- **साहित्य में स्थान** - कृष्णभक्त कवियों में सर्वोच्च स्थान तथा वात्सल्य रस के पुरोधा।

महाकवि सूरदास का जन्म ‘ रुनकता ' नामक ग्राम में सन् 1478 ई 0 में पं 0 रामदास के घर हुआ था। पं 0 रामदास सारस्वत ब्राह्मण थे। कुछ विद्वान् ‘ सीही ' नामक स्थान को सूरदास का जन्मस्थल मानते हैं।

सूरदासजी जन्मान्ध थे या नहीं , इस सम्बन्ध में भी अनेक मत हैं। कुछ लोगों का कहना है कि बाल -

मनोवृत्तियों एवं मानव - स्वभाव का जैसा सूक्ष्म और सुन्दर वर्णन सूरदास ने किया है , वैसा कोई जन्मान्ध व्यक्ति कर ही नहीं सकता , इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि वे सम्भवत : बाद में अन्धे हुए होंगे ।

सूरदासजी श्री वल्लभाचार्य के शिष्य थे । वे मथुरा के गऊघाट पर श्रीनाथजी के मन्दिर में रहते थे । सूरदास का विवाह भी हुआ था । विरक्त होने से पहले वे अपने परिवार के साथ ही रहा करते थे । पहले वे दीनता के पद गाया करते थे ,

किन्तु वल्लभाचार्यजी के सम्पर्क में आने के बाद वे कृष्णलीला का गान करने लगे ।

कहा जाता है कि एक बार मथुरा में सूरदासजी से तुलसी की भेंट हुई थी और धीरे - धीरे दोनों में प्रेम - भाव बढ़ गया था । सूर से प्रभावित होकर ही तुलसीदास ने 'कृष्णगीतावली' की रचना की थी । सूरदासजी की मृत्यु सन् 1583 ई 0 में गोवर्धन के पास ‘ पारसौली ' नामक ग्राम में हुई थी । मृत्यु के समय महाप्रभु वल्लभाचार्य के सुपुत्र विट्ठलनाथजी वहाँ उपस्थित थे ।

कृतियाँ -

कृष्ण भक्ति काव्यधारा के भक्त शिरोमणि सूरदास ने लगभग सवा - लाख पदों की रचना की थी । ' काशी नागरी प्रचारिणी सभा ' की खोज तथा पुस्तकालय में सुरक्षित नामावली के अनुसार सूरदास के ग्रन्थों की संख्या 25 मानी जाती है , किन्तु उनके तीन ग्रन्थ ही उपलब्ध हुए हैं—

(1) सूरसागर , (2) सूरसारावली, (3) साहित्य - लहरी ।

(1) सूरसागर – ' सूरसागर ' सूरदास की एकमात्र प्रामाणिक कृति है । इसके सवा लाख पदों में से केवल 8-10 हजार पद

ही उपलब्ध हो पाए हैं। सम्पूर्ण ' सूरसागर ' एक गीतिकाव्य है।

(2) सूरसारावली — यह ग्रन्थ अभी तक विवादास्पद स्थिति में है , 1,107 छन्द हैं।

(3) साहित्य - लहरी– " साहित्य - लहरी ' में सूरदास के 118 दृष्टकूट - पदों का संग्रह है। इसमें मुख्य रूप से नायिकाओं एवं अलंकारों की विवेचना की गई है। कहीं - कहीं पर श्रीकृष्ण की बाललीला का वर्णन तथा एक - दो स्थलों पर महाभारत की कथा के अंशों की भी झलक है।

भाषा - शैली- सूरदास मुक्तक शैली के गेय पद लिखते थे।